

मलयालम-हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.एम.एच.टी.)

सत्रीय कार्य
2021

(जनवरी 2021 और जुलाई 2021 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)



अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110 068

मलयालम-हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम
(पी.जी.सी.एम.एच.टी.)
सत्रीय कार्य 2021

(जनवरी 2021 और जुलाई 2021 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'मलयालम-हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम' (पी.जी.सी.एम.एच.टी.) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस अध्ययन कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ-साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। चार पाठ्यक्रमों वाले इस कार्यक्रम के तीन पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा और चौथा पाठ्यक्रम 'अनुवाद परियोजना' से संबंधित है। सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग-अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं! सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि इस प्रकार हैं :

पाठ्यक्रम कोड एवं शीर्षक	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	
	जनवरी 2021 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2021 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.-001 भारतीय भाषाओं में अनुवाद	31.03.2021	30.09.2021
एम.टी.टी.-004 मलयालम-हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन	31.03.2021	30.09.2021
एम.टी.टी.-005 मलयालम-हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद	31.03.2021	30.09.2021

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको भारतीय भाषाओं में अनुवाद, मलयालम-हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन के साथ-साथ इन भाषाओं के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

- 1) उत्तर के लिए फुलस्क्रेप कागज का ही इस्तेमाल करें।
- 2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर-पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके तीन सत्रीय कार्यों के लिए तीन उत्तर-पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।
- 3) अपनी उत्तर-पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

- 4) अपनी उत्तर-पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक :	नामांकन संख्या :
	नाम :
	पता :
पाठ्यक्रम कोड :	
पाठ्यक्रम का शीर्षक :	
सत्रीय कार्य कोड :	हस्ताक्षर :
अध्ययन केंद्र का नाम :	तिथि :

- 5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।
- 6) अपने उत्तर केवल फुलस्क्रेप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

- सत्रीय कार्य में दिए गए निर्देशों के अनुसार उत्तर लिखिए। व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।
- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और उसमें यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं, उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक हैं, तब उन्हें साफ-साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। मलयालम और हिंदी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की-सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन-क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

- क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों।

- च) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो।
- ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुकूल हो।
- घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों।
- ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।
- च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।
- छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।
- ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग-अलग लिखें।
- झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।
- ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर-पुस्तिका को किसी भी स्थिति में मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।
- ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।
- ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

भारतीय भाषाओं में अनुवाद (एम.टी.टी-001)

सत्रीय कार्य

(जनवरी 2021 और जुलाई 2021 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.

पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.-001

सत्रीय कार्य कोड : एम.टी.टी.-001/एसटी/
(टी.एम.ए.)/2021

पूर्णांक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। लगभग 300 शब्दों में उत्तर दीजिए।

1. भाषा-परिवार से आप क्या समझते हैं? भारत के प्रमुख भाषा-परिवारों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कीजिए। 10
2. बहुभाषिकता के हानि-लाभ को लेकर बहस के विविध आयामों पर एक निबंध लिखिए। 10
3. बहुभाषिक समाज में अनुवाद के विविध क्षेत्रों पर प्रकाश डालिए। 10
4. भारतीय भाषाओं की शब्दावली में विद्यमान अर्थपरक असमानताओं पर विस्तृत चर्चा कीजिए। 10
5. ध्वनि और वर्ण का अर्थ स्पष्ट करते हुए अनुवाद में वर्णमाला का महत्व सिद्ध कीजिए। 10
6. भारतीय भाषाओं की वाक्य रचना की समानताओं और असमानताओं पर अनुवाद की दृष्टि से विचार कीजिए। 10
7. प्रकृति के आधार पर अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 10
8. 'सामाजिक-सांस्कृतिक विशिष्टताओं का अनुवाद में पुनःसृजन' पर एक निबंध लिखिए। 10
9. मशीनी अनुवाद की संकल्पना स्पष्ट करते हुए मशीनी अनुवाद की प्रक्रिया एवं विधियों की चर्चा कीजिए। 10
10. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :
(क) अनुवाद का पुनरीक्षण
(ख) आशु अनुवाद की आंतरिक प्रक्रिया

मलयालम-हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन (एम.टी.टी.-004)
(जनवरी 2021 और जुलाई 2021 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.-004
सत्रीय कार्य : एम.टी.टी.-004 / एसटी /
(टी.एम.ए) / 2021

अधिकतम अंक : 100

1 निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 800 शब्दों में दीजिए :

10 × 2 = 20

(क) मलयालम और हिंदी की कारक रचना की तुलना कीजिए।

(ख) केरल की नृत्य-परंपरा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

2 निम्नलिखित मलयालम शब्दों के हिंदी पर्याय बताइए: 5

- | | |
|---------------|------------------|
| 1) ചുട്ടു | 11) നെന്തുകോടതി |
| 2) ഭൂമി | 12) ദിനകല്പ് |
| 3) നഗരം | 13) കുറു കുറു |
| 4) കലോ | 14) ദുരൂ |
| 5) വേനിക്കാലം | 15) നട്ടുപരിചാരം |
| 6) ദിനനാമ | 16) നൂതന പക്ഷം |
| 7) ചരിത്രം | 17) പരാതി |
| 8) കവയി | 18) മാതൃപ്രീതി |
| 9) ക്രിസ്തീയത | 19) ചെടികൾ |
| 10) ദുർഗ്ഗ | 20) സമഗ്രത |

3. निम्न लिखित हिंदी शब्दों के मलयालम पदों में
 बताइए :

5

- | | | |
|---------------|-------------|------------------|
| 1) मुलायम | 2) लोकोक्ति | 3) किर बैलगाड़ी |
| 4) हवाई अड्डा | 5) गरीब | 6) शुरू करना |
| 7) महीना | 8) वापस आना | 9) माघण |
| 10) पश्चिम | 11) दामाद | 12) सफेद |
| 13) धराना | 14) कबूल | 15) कमीज़ |
| 16) वेतन | 17) क्षमता | 18) प्रबंध समिति |
| 19) दाहिना | 20) पर्यटक | |

4. निम्नलिखित वाक्यों को हिंदी में अनुवाद कीजिए : 20

- 1) കൂട്ടുകുടാരിയിലെ സമുദ്ര തീരത്ത് വിവിധകാലൻ
 സ്മാരകം ഉണ്ട്.
- 2) താങ്കൾ കഴിഞ്ഞ സന്ധ്യ ചെന്ന തിരിച്ചു വന്നാലും.
- 3) പെൺകുട്ടികൾക്കായി ജീവൻ അറിയാം.
 സ്കൂളുകൾ ഉണ്ട്.
- 4) ശിവകുമാരന്റെ കയ്യിൽ വലിയ നല്ലതാണ്.
- 5) ഗോവിന്ദൻ വാങ്ങുക കേട്ട് ജനങ്ങൾ കയ്യിൽ.
- 6) ജനകീയ ജന്മ ദൈവ കർമ്മം ചെയ്ത വെളിപ്പ.
- 7) ദൂരം അയാളുടെ ചാക്ക് കേട്ടിട്ടു.
- 8) ചെങ്കരത്തിന് നല്ല വിജയ കാലം.

9) ഉന്നത വൈകല്യങ്ങൾ ചെറുപ്പം മുതൽക്കു വന്നിട്ടുണ്ടാവാം.

9) അല്ലെങ്കിൽ ഉന്നത വൈകല്യങ്ങൾ കാര്യമായിട്ടുള്ളവയല്ല.

10) അല്ലെങ്കിൽ ഉന്നത വൈകല്യങ്ങൾ കാര്യമായിട്ടുള്ളവയല്ല.

11) അല്ലെങ്കിൽ ഉന്നത വൈകല്യങ്ങൾ കാര്യമായിട്ടുള്ളവയല്ല.

12) അല്ലെങ്കിൽ ഉന്നത വൈകല്യങ്ങൾ കാര്യമായിട്ടുള്ളവയല്ല.

13) അല്ലെങ്കിൽ ഉന്നത വൈകല്യങ്ങൾ കാര്യമായിട്ടുള്ളവയല്ല.

14) അല്ലെങ്കിൽ ഉന്നത വൈകല്യങ്ങൾ കാര്യമായിട്ടുള്ളവയല്ല.

15) അല്ലെങ്കിൽ ഉന്നത വൈകല്യങ്ങൾ കാര്യമായിട്ടുള്ളവയല്ല.

16) അല്ലെങ്കിൽ ഉന്നത വൈകല്യങ്ങൾ കാര്യമായിട്ടുള്ളവയല്ല.

17) അല്ലെങ്കിൽ ഉന്നത വൈകല്യങ്ങൾ കാര്യമായിട്ടുള്ളവയല്ല.

18) അല്ലെങ്കിൽ ഉന്നത വൈകല്യങ്ങൾ കാര്യമായിട്ടുള്ളവയല്ല.

19) അല്ലെങ്കിൽ ഉന്നത വൈകല്യങ്ങൾ കാര്യമായിട്ടുള്ളവയല്ല.

20) അല്ലെങ്കിൽ ഉന്നത വൈകല്യങ്ങൾ കാര്യമായിട്ടുള്ളവയല്ല.

അതുകൊണ്ട് പഠിക്കുക.

5 (ക) നിജനിധിയിൽ മുഹാദദി/തുകക്കിടയിൽ കാ അടയ
 ഫിക്ട് മേ ഹൃദ കിടയിൽ .

10

- 1) താമരക്കിടയിൽ താമരക.
- 2) താമര പാർക്കിരിക്കുക.
- 3) കിടയിൽ നട്ടിരിക്കുക.
- 4) ചാക്ക് പാലിക്കുക .
- 5) തലയിൽ കയറുക .
- 6) വിതച്ചത് കൊയ്യുക .
- 7) കിടയിൽ കാൽ കയ്യുന്നതായും വിടിക്കണം
- 8) നാടോടുകൾക്കും നാടോടുകൾക്കും .
- 9) അതായത് പാർക്കിൽ വിടുക തുടങ്ങിയും
- 10) താമരക്കിടയിൽ കാൽ തീർത്തോ?

(ഉ) നിജനിധിയിൽ തുകക്കിടയിൽ അർ മുഹാദദി കേ ഫിക്ട്
 ഫിക്ട് തുകക്കിടയിൽ അർ മുഹാദദി കിടയിൽ .

-10

- 1) മുഹാദദിയിൽ തുടർച്ചയായും .
- 2) ഇരിക്കുക കൊണ്ട് മുഹാദദി .
- 3) തുടർച്ചയായും മുഹാദദി ചിറ കെട്ടിയിടാതെ തുടർച്ചയായും?
- 4) തുടർച്ചയായും ചാക്ക് പാലിക്കുക .
- 5) ചെങ്കുത്തായും കയ്യുന്നതായും നട്ടുക.
- 6) മുഹാദദിയിൽ പാർക്കുക
- 7) ചാക്ക് പാലിക്കുക നോക്കുക
- 8) തുടർച്ചയായും കെട്ടുക
- 9) ചെങ്കുത്തായും പാർക്കുക
- 10) മുഹാദദി കെട്ടുക.

(9)

6 ജിജ്ഞാസിക്കുന്ന ചോദ്യങ്ങൾക്ക് കീഴ്ത്തിയിട്ടുള്ള ചോദ്യങ്ങൾക്ക്

10 x 2 = 20

(എ)

പ്രപഞ്ചത്തിൽ ഭൂതകാലവും ഭാവിക്കാലവുമെന്നുമില്ല സംഭവങ്ങളെ ഭൂതം വർത്തമാനം - ഭാവി എന്നിങ്ങനെ തരംതിരിക്കുന്നതിൽ അർത്ഥമില്ലെന്നുമാത്രമല്ല അതു വെറും മിഥ്യാധാരണയുമാണ്

അല്ലെങ്കിൽത്തന്നെ വർത്തമാനകാലത്തെ ഏതെങ്കിലും ഉപകരണമുപയോഗിച്ച് അളക്കാൻ കഴിയുമോ? അതെല്ലാം ചില മാനസികവ്യാപാരങ്ങൾ മാത്രമാണ് നാളെ അല്ലെങ്കിൽ ഭാവി എന്നെന്നാണല്ലോ എന്നു പറയേണ്ടിവരും. ഓരോ നാളെയും ആദിവാസത്തിന്റെ ഇന്നുകൂടെയാണ് ഓരോ ഭാവി നിമിഷവും അതനുഭവപ്പെടുമ്പോൾ ഇപ്പോഴാണ് ഭൂതം ഭാവി എന്നെല്ലാം പറയുന്നത് ഭാഷാപരമായുള്ള ഒരുഭാസം മാത്രമാണ് അതുകൊണ്ട്

സംഭവങ്ങളെ വിശദീകരിക്കുന്നതിന് ഗണിതശാത്രമാണ് ഭാഷയെക്കാൾ അഭികാമ്യം. ഉദാഹരണമായി 2012 മാർച്ച് 21 എന്ന് സ്വതന്ത്രമായി

നിശ്ചയിക്കപ്പെട്ട സമയം പോലെ പ്രപഞ്ചത്തിലെ ഓരോ സംഭവങ്ങളെയും വിവരിക്കാൻ കഴിയും. ഭൂതത്തെയും ഭാവിയെയുമെന്നും ഇടപെടുത്താതെ തന്നെ. അപ്പോൾ നിങ്ങൾക്കു ചോദിക്കാം 2013 ഇതുവരെ സംഭവിച്ചിട്ടില്ല. അത് ഭാവിയല്ലേ? തീർച്ചയായും അല്ല. 2014 പതിമണിപ്പാൽ 2013 എങ്ങനെ ഭാവിയാകും. 2013 ഉം സംഭവിക്കാത്തതല്ലെ നമ്മൾ ഇപ്പോൾ 2013ൽ അല്ലല്ലോ ഇപ്പോൾ എന്നു പറഞ്ഞാൽ നമുക്ക് അനുഭവിക്കാവുന്ന ഓരോ നിമിഷവുമാണ് 2013 സംഭവിക്കുമ്പോൾ അതും ഇപ്പോൾ തന്നെയാണ് 2012നെ ഇപ്പോഴത്തെ ഇപ്പോൾ എന്നാണോ പറയേണ്ടത് 2013 നെ ഇപ്പോഴത്തെ ഇപ്പോഴിന്റെ ഭാവിയും 2014നെ ഇപ്പോഴിന്റെ ഭൂതവുമാണെന്നു വരുമല്ലോ വെറും വാചകക്കുസർത്തല്ലാതെ മറ്റൊന്നാണിത്?

(ഭ)

ക്രി. വ. 476ലാണ് ആര്യഭടന്റെ ജനനം. അശ്വമേധ ദേശത്താണ് ജനിച്ചതെന്ന് സൂചനയുണ്ടെങ്കിലും എവിടെയാണ് അശ്വമേധ എന്നറിയില്ല. അത് കേരളത്തിലാണെന്ന് വിശ്വസിക്കുന്നവരുണ്ട്. ജീവിച്ചതും പഠനങ്ങൾ നടത്തിയതും കൂസുമ്പുരത്താണെന്ന് ആര്യഭടീയത്തിൽത്തന്നെ പറയുന്നുണ്ട്. മഗധയുടെ തലസ്ഥാനമായിരുന്ന പാടലീ പുത്രം (പാറ്റ്ന) ആണ് കൂസുമ്പുരം എന്നു കരുതപ്പെടുന്നു. 23-ാം വയസ്സിലാണ് ആര്യഭടീയ രചന.

ആര്യഭടീയത്തിനു 4 ഭാഗങ്ങളാണുള്ളത്: ഗീതികാപാദം, ഗണിതപാദം, കാലക്രിയാപാദം, ഗോളപാദം. എല്ലാംകൂടി 121 ശ്ലോകങ്ങൾ മാത്രം. അന്നത്തെ ജ്യോതിശ്ശാസ്ത്ര വിജ്ഞാനം മുഴുവൻ അതിൽ ആറ്റിക്കുറുകിവെച്ചിരിക്കുന്നു. ഗീതികാപാദത്തിൽ 13 ശ്ലോകങ്ങളാണുള്ളത്. ജ്യോതിശ്ശാസ്ത്രത്തിലെ ചില പ്രധാന നിർവചനങ്ങൾ, ചരങ്ങളുടെ പട്ടിക, കല്പം, മനു, യുഗം തുടങ്ങിയ കാലയളവുകൾ, ഭാഗ, കല തുടങ്ങിയ കോണളവുകൾ, അംഗുലം, ഹസ്തം, യോജന തുടങ്ങിയ ദൂരം അളവുകൾ ഇവയെല്ലാം ഗീതികാപാദത്തിൽ പ്രതിപാദിച്ചിരിക്കുന്നു. കൂടാതെ ഗ്രഹങ്ങളുടെ അപഭൂമിദൂരങ്ങൾ (Apogee), സൂര്യോച്ചം (Aphelion), ഗ്രഹപഥങ്ങളും ക്രാന്തിവൃത്തവുമായുള്ള ചരിവ്, സൈൻ പട്ടിക (Sine table) ഇവയും അതിൽ പ്രതിപാദിക്കുന്നു.

ഗണിതപാദത്തിൽ 33 ശ്ലോകങ്ങളുണ്ട്. വിവിധ ജ്യോമിതിരൂപങ്ങൾ, വ്യാപ്തം, നിഴൽഘടികാരം, വിവിധതരം ഗണിതശ്രേണികൾ (Progressions), പലിശ, ഗണിത സമീകരണങ്ങളുടെ നിർധാരണം, വർഗമൂലം, ഘനമൂലം തുടങ്ങിയവ ചർച്ച ചെയ്യുന്നു.

15 अक्टूबर 1931 को रामेश्वरम, तमिलनाडु में जन्मे डॉ. अवुल पकीर जैनुल आबिदीन अब्दुल कलाम भारत के राष्ट्रपति बने। हालांकि उनका संबंध एक गरीब परिवार से था लेकिन समाज के लिए करने की उनकी इच्छा उनको अपने सपने को पूरा करने से नहीं रोक सी। उन्होंने मद्रास इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नॉलजी से एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की। डॉ. कलाम ने भारत की पहली देसी सैटेलाइट लॉन्च वीइकल (एसएलवी-III) को विकसित करने में परियोजना निदेशक के रूप में अहम भूमिका निभाई जिसने जुलाई 1980 में पृथ्वी के कक्ष के समीप रोहिणी सैटेलाइट को सफलतापूर्वक प्रवेश कराया और भारत के अंतरिक्ष क्लब का एक विशिष्ट सदस्य बनाया। वह इसरो के लॉन्च वीइकल प्रोग्राम खासकर पीएसएलवी कॉन्फिगरेशन शुरू करने के

लिए उत्तरदायी थे। इसरो में दो दशक तक काम करने और लॉन्च वीइकल तकनीक में दक्षता हासिल करने के बाद डॉ. कलाम ने एकीकृत नियंत्रित मिसाइल विकास कार्यक्रम (आईजीएमडीपी) के चीफ एग्जेक्यूटिव के रूप में रक्षा शोध एवं विकास संगठन में देसी निर्देशित मिसाइल को विकसित करने की जिम्मेदारी संभाली। वह अग्नि और पृथ्वी मिसाइलों के विकास और ऑपरेशन और विभिन्न संस्थानों की नेटवर्किंग के माध्यम से अहम तकनीक में देश की क्षमता बढ़ाने के लिए जिम्मेदार थे। इस तरह से बैलिस्टिक मिसाइल और लॉन्च वीइकल तकनीक के विकास पर उनके कार्य के लिए भारत के मिसाइल मैन के रूप में वह विख्यात हो गए। वह जुलाई 1992 से दिसंबर 1999 तक रक्षा मंत्री के रक्षा सलाहकार एवं सचिव, रक्षा शोध एवं विकास विभाग रहे। इस अवधि के दौरान उन्होंने महत्वपूर्ण मिसाइलों को तैयार

मलयालम-हिंदी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद (एम.टी.टी.-005)
(जनवरी 2021 और जुलाई 2021 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.एम.एच.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.-005
सत्रीय कार्य : एम.टी.टी.-005/एसटी/
(टी.एम.ए)/2021

अधिकतम अंक : 100

1. निम्नलिखित वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए 10

- (1) നാളെ രാവിലെ കഴിഞ്ഞതിൽ ശ്രീമദ്
സന്തോഷമുണ്ട്.
- (2) ഉത്തരേന്ത്യയിൽ ജനങ്ങൾ ഹോളി സൂര്യോദയം കണ്ടു.
- (3) ദൈവപ്രാപ്തിക്ക് വിദ്യാഭ്യാസമുണ്ട് കഴിഞ്ഞ പഠിച്ചു.
- (4) കട്ടൻ കുതിരയെപ്പോലെ വേഗത്തിൽ ഓടുകയുണ്ട്.
- (5) ഞാൻ ഇന്നലെ മഴയിൽ സന്ദർശിച്ചു.
- (6) പലർക്കും ഭാര്യ പ്രധാന മന്ത്രിയെ പ്രാധാന്യം ഉണ്ട്.
- (7) കറുത്ത രാത്രിയിൽ സൂര്യൻ ഉദയം ചെയ്തു.
- (8) മനസ്സിൽ എപ്പോഴും പാടി?
- (9) എനിക്ക് ഈ കെട്ടിടം കണ്ടാൽ സാധിക്കുകയില്ല.
- (10) നാം നല്ല പാലം പരിശുദ്ധിക്കുന്നു.
- (11) പ്രാദേശിക സെക്ഷൻ സാധനങ്ങൾ കണ്ടു.

2. निम्नलिखित शब्दों के मलयालम और हिंदी

5

अर्थ बताइए :

- | | | |
|-------------|---------------|-------------|
| (1) कल्याण | (2) शिक्षा | (3) संभावना |
| (4) आलोचना | (5) विषम | (6) मातृ |
| (7) व्यसन | (8) कल्पना | (9) अवकाश |
| (10) प्रयास | (11) प्रसाधन | (12) योग |
| (13) आक्षेप | (14) प्रबंध | (15) अवधि |
| (16) आश्रय | (17) आविष्कार | (18) संतोष |
| (19) संकल्प | (20) स्वदेश | |

3 कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके मलयालम और हिंदी में समान पर्याय प्रचलित हैं, उदाहरण के लिए

उर्दू पर्याय	मलयालम	हिंदी
मेहरबानी	कृपा	कृपा

नीचे कुछ ऐसे कुछ शब्द दिए जा रहे हैं। उनके मलयालम और हिंदी पर्याय बताइए।

5

- | | | |
|------------|------------|-------------|
| (1) कोशिश | (2) जिंदगी | (3) सहूलियत |
| (4) इंतजाम | (5) नतीजा | (6) कसरत |
| (7) मौजिल | (8) उम्मीद | (9) पारत |
| (10) ताकत | (11) सहत | (12) मजूर |
| (13) खबर | (14) सलाह | (15) फायदा |
| (16) करीब | (17) मिसाल | (18) एहसान |
| (19) इजाजत | (20) जवान | |

(13)

5)

എന്താണ് കേരളീയരുടെ എന്നത് മാധ്യമപ്രവർത്തകൻ എന്ന നിലയിലും കലാകാരനെന്ന നിലയിലും എന്നെ നിരന്തരമായി അലട്ടിയിട്ടുള്ള ഒരു പ്രശ്നമാണ്. ആദ്യം മനസ്സിലാക്കേണ്ടതുകേരളീയരുടെ അംശം ഒരുപക്ഷേ, നമ്മുടെ ഭാഷയെന്നാണ്. നമ്മുടെ ഭാഷയ്ക്ക് എത്ര പഴക്കമുണ്ടെന്ന് നമുക്ക് അവകാശപ്പെടാൻ വയ്യ. എന്തായാലും ആധുനികം എന്നു പറയുന്ന മലയാളഭാഷയ്ക്ക് 500 ലധികം വർഷത്തെ പഴക്കമില്ല എന്നു നമുക്കറിയാം. പക്ഷേ, 500 വർഷം കൂറുള്ള ഒരു കാലയളവല്ല. കാരണം ആധുനിക ആശയോദയത്തിന് അതിൽ കുറച്ചു വയസ്സുള്ളൂ. അപ്പോൾ ഇംഗ്ലീഷിനേക്കാൾ പ്രായമുള്ള ഒരു ഭാഷയാണ് നമ്മുടെ കൊച്ചുമലയാളഭാഷ. അതുകൊണ്ട് മോശപ്പെട്ട കാര്യമെന്നു തല്ല. പക്ഷേ, എത്രമാത്രം പരിശുദ്ധി ആ ഭാഷയ്ക്ക് അവകാശപ്പെടാം എന്നുള്ള കാര്യത്തിൽ സന്ദേഹമില്ല. മണിപ്രവാളകാലം. അതിനുമുമ്പ് നമ്മുടെ പ്രധാനപ്പെട്ട എഴുത്തുകാരെല്ലാം നമിഴിൽ എഴുതിയിരുന്ന ഒരു ഘട്ടം. അതിനു മുമ്പ് ഒരുപക്ഷേ, നമ്മുടെ പ്രധാനപ്പെട്ട എഴുത്തുകാർ, പ്രത്യേകിച്ചും കൂടിയൊട്ടും കഥകളുടെയും നാടകങ്ങളുടെയും കർത്താക്കൾ കേരളത്തിലുണ്ടായിരുന്നു എന്നതിൽനിന്ന് സംസ്കൃതത്തിൽ വ്യക്തമായി നേടിയിരുന്ന ഗ്രന്ഥകാരന്മാർ നമ്മുടെ കേരളക്കരയിൽ ജീവിച്ചിരുന്നു എന്നതിന് തെളിവുണ്ട്.

സാമൂഹ്യസാഹിത്യത്തിൽ ഉത്തരകേരളം മാത്രം താമസം ചെയ്താൽ മലയാളം പരീക്ഷിക്കേണ്ടതാണ്. മലയാളം കൊണ്ടുവന്നു മാണിയുടെ എഴുത്തുകൾ വായിച്ചുകേൾപ്പിച്ചു. അപൂർവ്വസുന്ദരമായ ഭാഷാ ശൈലിയും ആവിഷ്കാരശീലുമായിരുന്നു മാണിയുടെ രചനകൾക്ക്.

മനോഹരമായ മലയാളവും നിലവാരപ്പെട്ട ഇംഗ്ലീഷും മാണി ജേക്കബ് എന്റെ സ്വന്തം സുഹൃത്തായിരുന്നല്ലോ. അതുകൊണ്ട് അസൂയപ്പെട്ടില്ല. മറിച്ച് അഭിമാനം കൊണ്ടു.

മാണിയെ ആദ്യം കണ്ട മുഹൂർത്തം ഓർമ്മയിലുണ്ട്. 1957 ൽ തിരുനെൽവേലൂരത്ത് നടന്ന സാഹിത്യപരിഷത്ത് മഹാജനം കവിതാമത്സരത്തിൽ സമ്മാനം നേടി ഫോർത്തി ഫോറം കൂട്ടിയായ മാണി ജേക്കബ് പരിഷത്ത്വേദിയിൽ ശ്രീകുമാർ ചങ്ങമ്പുഴ, ശ്രീകുമാരൻ തമ്പി, മാണിജേക്കബ് എന്നീ കൂട്ടൻമാർ മിന്നിത്തിളങ്ങുന്നത് കണ്ടപ്പോൾ എനിക്ക് ശകലം അസൂയ ഉണ്ടായി - നേർ!

പിന്നോക്കർക്കെല്ലാം മാണിയുടെ കാമ്യത്തിൽ അസൂയയും അത്ഭുതവുമൊന്നും തോന്നിയിട്ടില്ല.

7) പരമ്പര

ജനജീവിതത്തിന്റെ സമസ്തമേഖലകളിലും പുത്തനുണർവ്

ഭവനരഹിതർക്ക് വീടുകൾ വൈദ്യുതി രംഗത്ത് മുന്നേറ്റം കൂടുതൽപേർക്ക് ശുദ്ധജലം തൊഴിൽ രംഗത്ത് ഭാവനാ പൂർണ്ണമായ നവപദ്ധതികൾ

പ്രീപ്രൈമറി മുതൽ ഹയർസെക്കണ്ടറി വരെയുള്ള വിദ്യാഭ്യാസപരങ്ങളുടെയും, പ്രാഥമികാരോഗ്യകേന്ദ്രങ്ങൾ മുതൽ ജില്ലാ ആശുപത്രിവരെയുള്ള സംവിധാനത്തിന്റെയും, ഭരണച്ചുമതല തദ്ദേശസ്വയഭരണ സ്ഥാപനങ്ങൾക്ക് ഗ്രാമസഭമുതൽ ഓംബുഡ്സ്മാൻ വരെ സമഗ്രമായ അധികാരവികേന്ദ്രീകരണം തദ്ദേശസ്വയഭരണ സ്ഥാപനങ്ങൾക്ക് പ്രാദേശിക സർക്കാരുകളുടെ പദ്ധതി.

പബ്ലിക് റിലേഷൻസ് വകുപ്പ് കേരള സർക്കാർ

अनुवाद कीजिए :

आज जब विज्ञान ने हमारे जीवन में गहन अंतःप्रवेश कर लिया है तो मूलतः मानवीय मस्तिष्क का कार्यकलाप समझी जाने वाली अनुवाद जैसी कला भी तकनीकी और विज्ञान से भरपूर लाभान्वित हो रही है। कंप्यूटर अनुवाद आज एक सामान्य गतिविधि हो गया है। यातायात एवं संचार साधनों ने दुनिया-भर के समाजों को जिस तेज़ी से जोड़ा है उस संचार क्रांति का उपयोग आज अनुवाद में अपने ढंग से किया जा रहा है। अनुवाद की प्रक्रिया में मशीन और मनुष्य संवाद पर नज़र डालें तो हम पाते हैं कि कई क्षेत्रों में तो अनुवाद में कंप्यूटर अवश्यभावी हो गया है।

मशीनी अनुवाद को आरंभ हुए लगभग आधी शताब्दी से अधिक बीत चुकी है। कितनी भी वैज्ञानिक कार्यकलाप के लिए यह काफी लंबा समय है। इसीलिए मशीनी अनुवाद का क्षेत्र अपने आप में पर्याप्त लंबा और वैविध्यपरक गतिविधियों से पूर्ण इतिहास समेटे हुए है। अनुवाद के लिए मशीन के उपयोग के संदर्भ में वास्तव में कहा जा सकता है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। 1940 के दशक में विश्व युद्ध के दौरान (विशेष रूप से 1945 के लगभग) इसकी शुरुआत हुई। सेना संबंधी सूचनाओं के अनुवाद के लिए मशीन का प्रयोग सर्वप्रथम इसी समय हुआ। युद्ध में विभिन्न राष्ट्रों के सैनिक एक ही मोर्चे पर लड़ते थे। भिन्न-भिन्न भाषाओं को बोलने वाले सैनिकों के लिए जारी की जाने वाली सूचनाओं और आदेशों के अनुवाद के लिए विज्ञान के उपकरणों की सहायता ली गई ताकि संदेश शीघ्रतिशीघ्र अनूदित होकर सही लोगों तक पहुँच सकें। यह व्यवस्था नितांत आवश्यक थी क्योंकि इतने बड़े पैमाने पर लड़ी जाने वाली लड़ाई में अलग-अलग भाषाएँ बोलने वाले सैनिकों तक वेतार और रेडियो द्वारा संदेश पहुँचाने का यह सबसे सहज उपाय हो सकता था।